

## भारतीय ज्ञान परंपरा और गीत

डॉ. निर्मल चक्रधर

सहायक प्राध्यापक- हिन्दी

माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इंदौर

Received– 26 September - 2026

Accepted– 28 September - 2026

Published– 30 September-2026

Corresponding Author-

डॉ. निर्मल चक्रधर

सहायक प्राध्यापक- हिन्दी

माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इंदौर

DOI- <https://doi.org/10.67275/SU.2026.041518>

Funding Policy-

‘Shodh Utkarsh’ is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.

वित्त पोषण नीति-

‘शोध उत्कर्ष’ एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -

© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).

कापीराइट सूचना-

© 2026 लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।



भारतीय ज्ञान परंपरा में गीतों की समृद्ध परंपरा रही है। गीत भावनाओं की सहज, सरल, लयबद्ध अभिव्यक्ति है। गीत न केवल शाब्दिक सौंदर्य के संवाहक हैं, अपितु मानवीय संवेदनाओं, अनुभूतियों और विचार प्रवाह को प्रस्तुत करने का माध्यम है। यह विधा वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक विभिन्न रूपों में निरंतर विद्यमान रही है। गीत का सम्बन्ध केवल साहित्य सृजन से न होकर अध्यात्म, संस्कृति व संगीत से भी रहा। संस्कृत में गीत शब्द 'गा' धातु से बना है, जिसका अर्थ है- गाना। यह काव्य की एक प्रचलित विधा है, जिसमें भावनाओं की गहनता, लय की मधुरता और भाषा की सरसता का त्रिवेणी संगम प्रवाहित होता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार-"गीत वह काव्य है, जो भाव प्रधान हो और गेयता का गुण उसमें प्रमुख हो।"<sup>1</sup> डॉ. नामवर सिंह कहते हैं-"गीत आत्मा की प्रतिध्वनि है, जो शब्दों में लयबद्ध होकर फूट पड़ती है।"<sup>2</sup> डॉ. नगेन्द्र के अनुसार - गीत वह काव्य है, जो संक्षिप्त होते हुए भी भावों की तीव्रता, संगीतात्मकता और लय में पूर्ण होता है।<sup>3</sup> डॉ. रामविलास शर्मा का विचार है कि "गीत वह है जिसमें सामाजिक चेतना और निजी संवेदना का सामंजस्य हो।"<sup>4</sup>

भारतीय ज्ञान परंपरा में एक प्रसंग आता है कि वन में रति क्रीडारत क्राँच पक्षियों के जोड़े में से नर पक्षी को एक बहेलिए द्वारा तीर से मार दिया जाता है, तब मादा क्राँच पक्षी के आर्द्र विलाप को सुन महर्षि वाल्मीकि के मुख से करुण आह स्वरूप प्रथम श्लोक, पहला करुण गीत स्वतः फूट पड़ता है-

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।

यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहितम् ॥

निषाद, त्वम् शाश्वतीः समाः प्रतिष्ठां मा अगमः,

यत् (त्वम्) क्रौंच-मिथुनात् एकम् काम-मोहितम् अवधीः ॥"<sup>5</sup>

हे निषाद ! तुम अनंत वर्षों तक प्रतिष्ठा प्राप्त न कर सको, क्योंकि तुमने क्राँच पक्षियों के जोड़े में से कामभावना से ग्रस्त एक का वध कर डाला है। (शब्दकोश के अनुसार क्राँच सारस की अथवा बगुला की प्रजाति का पक्षी बताया जाता है। किसी अन्य शब्दकोश में चकवा या चकोर भी देखने को मिला है।) यह श्लोक महर्षि वाल्मीकि के मुख से एक बहेलिए के प्रति अनायास निकला

शाप है कि वह कभी भी प्रतिष्ठा न पा सके। आह से उपजा यह श्लोक करुणा की मार्मिक अनुभूति कराता है।

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत भी इसी सत्य का निदर्शन कराते हैं-

"वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।

निकलकर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान ॥"<sup>6</sup>

करुणा, भक्ति और आनंद के क्षणों में गान की स्वतः उत्पत्ति निहित है।

**वैदिक काल में गीत** - भारतीय ज्ञान परंपरा का आरंभ वैदिक युग से होता है। सामवेद को गीतात्मक वेद कहा जाता है। सामवेद के अधिकांश मंत्र लयबद्ध एवं संगीतबद्ध हैं। वैदिक ऋचाओं की गेयता गीत-परंपरा की प्रारंभिक अभिव्यक्ति है। यज्ञों एवं धार्मिक अनुष्ठानों में इन गीतात्मक मंत्रों का प्रयोग होता था। गीत यहीं तक सीमित न रहकर आत्मा और परमात्मा के मिलन का बोध कराते थे। डॉ. रामकुमार वर्मा ने आधुनिक छायावाद के गीतों को भी 'आत्मा की छाया का परमात्मा और परमात्मा की छाया का आत्मा में आंतरिक परावर्तन' माना है। वैदिक मंत्र- 'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।' गायत्री की आराधना का प्रसिद्ध मंत्र गीत है। पूर्णाहुति मंत्र- 'ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥' अनुष्ठानिक मंत्र के रूप में प्रतिष्ठित है। शान्ति मंत्र के रूप में-

'ॐ असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय ॥

अभीष्ट मंत्र है। मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का महामृत्युंजय मंत्र:-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ '

से हम सभी भली-भाँति परिचित हैं।

**उत्तर वैदिक तथा पुराणिक कालखंड के गीत-** इस कालखंड में गीतों की सर्जना एवं गायन धार्मिक कथाओं, स्तुतियों, भजनों एवं देवी देवताओं की महिमा गान के रूप में हुआ। 'श्रीमद्भागवत गीता' मूल रूप से गीतात्मक दर्शन ग्रंथ है। 'गीतोपनिषद्' उपमा से प्रतिष्ठित इस अद्भुत ग्रंथ को ज्ञान, भक्ति और निष्काम कर्म का समन्वय माना जाता है। महाकवि जयदेव द्वारा रचित 'गीत गोविंद' को संस्कृत गीति काव्य परंपरा का उत्कर्ष कहा जा सकता है। इसमें राधा-कृष्ण की प्रेम-लीला को रसपूर्ण, भावप्रवण एवं गेय शैली में पिरोया गया है। श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए कवि जयदेव की सरस एवं गेय पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

"श्रुतकमला-कुच-मंडल धृतकुंडल ए।  
कलित-ललित-वनमाल जय जय देव हरे॥  
दिनमणि-मंडल-मंडन भवखंडन ए।  
मुनिजन-मानस-हंस जय जय देव हरे ॥"<sup>7</sup>

**भक्ति काल के गीत -**

भक्तिकाल को हिन्दी गीत परंपरा का भी स्वर्णयुग माना जा सकता है। इस युग में गोस्वामी तुलसीदास, महाकवि सूरदास, मीरा, कबीर, रैदास, नानक, रसखान, दादूदयाल, संत सिंगाजी, रहीम इत्यादि महान विभूतियों की सुमधुर रचनाओं से भरी वृहद एवं समृद्ध गीति परंपरा रही है। विभिन्न रागों पर आधारित सूरदास के पद श्रृंगार, विप्रलंभ और वात्सल्य का आस्वादन कराते हैं-

"चरन-कमल बंदों हरि-राइ।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे कौं सब कुछ दरसाइ॥  
बहिरौ सुनै, गुंग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।  
सूरदास स्वामी करुणामय, बार-बार बंदों तिहिं पाइ॥"<sup>8</sup>

वहीं मीरा के भजन आत्मसमर्पण, प्रेम और भक्ति का रसास्वादन कराते हैं-

"हे री मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय।

सुली ऊपर सेज हमारी, किस बिध सोना होय।  
गगन मंडल पर सेज पिया की, किस बिध मिलना होय॥  
घायल की गति घायल जानै, कि जिन लागी होय।"<sup>9</sup>

कबीर की साखी, सबद व रमैनी गहन जीवन दर्शन की गीतात्मक अभिव्यक्ति कराते हैं-

"चल हंसा वा देस जहँ पिया बसै चितचोर।

सुरत सोहासिन है पनिहारेन, भरै टाढ़ बिन डारे॥

वहि देसवाँ बादर ना उमड़ै रिमझिम बरसै मेह।

चौबारे में बैठ रहो ना, जा भीजहु निर्देह॥

वहि देसवा में नित पूर्णिमा, कबहुँ न होय अँधेर।

एक सुरज कै कवन बतावै, कोटिं सुरज ऊँजेर॥"<sup>10</sup>

**रीतिकाल के गीत-** रीतिकाल में गीतों का प्रयोग श्रृंगार भाव के प्रदर्शन के निमित्त हुआ। रीतिकालीन कवियों बिहारी, देव, पदमाकर, कविप्रिय, घनानंद, केशवदास आदि ने नायक-नायिका भेदों से युक्त अलंकारिक एवं श्रृंगारिक गीत लिखे। घनानंद के रीतिमुक्त पदों का सौंदर्य दर्शनीय है-

"रावरै रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारियै।

त्यों इन आँखिन बानि अनोखी, अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारियै॥

एक ही जीव हुतौ सु तौ वार्यो, सुजान, संकोच औ सोच सहारियै।

रोकौ रहै न, दहै घनआनंद बावरी रीझि के हाथन हारियै॥"<sup>11</sup>

**राष्ट्रीय काव्य-धारा, छायावाद युग एवं हालावाद के गीत-आधुनिक** हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय काव्य-धारा, छायावाद युग में गीत विधा को एक नई पहचान मिली। राष्ट्रीय काव्य धारा के कवि, गीतकार द्वारिका प्रसाद मिश्र, सोहनलाल द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान ने अपने गीतों से जन-जन के जीवन तथा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक नयी जान फूंकने का कार्य किया। द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी देश के

नौजवानों को प्रेरित करते हुए यह गीत लिखते हैं-

"वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

हाथ में ध्वजा रहे, बाल दल सजा रहे

ध्वज कभी झुके नहीं, दल कभी रुके नहीं

वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो

तुम निडर डरो नहीं, तुम निडर डटो वहीं

वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!"<sup>12</sup>

इसी तरह का भाव छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद अपने प्रसिद्ध नाटक 'चंद्रगुप्त' के माध्यम से राजकुमारी अलका के द्वारा मगध के वीर सैनिकों को प्रेरित और आंदोलित करते हुए प्रकट करते हैं-

"हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती

स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती

'अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़- प्रतिज्ञा सोच लो,

प्रशस्त पुण्य पथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो!"

असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी

सपूत मातृभूमि के- रुको न शर साहसी!

अराति सैन्य सिंधु में, सुवाडवाग्नि से जलो,

प्रवीर हो जयी बनी - बढ़े चलो, बढ़े चलो!"<sup>13</sup>

आधुनिक युग की मीरा महादेवी वर्मा के गीतों में विरह और आध्यात्मिक अनुभूति की गहराई मिलती है।

अपने मन का करुण गीत सुनाती हुई कहती हैं-

"मैं नीर भरी दुख की बदली!

स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा

क्रन्दन में आहत विश्व हँसा

नयनों में दीपक से जलते,

पलकों में निर्झरिणी मचली!"<sup>14</sup>

वहीं सुमित्रानंदन पंत के गीत प्रकृति के सानिध्य में मन की एकात्मकता को प्रकट करते हैं-

"बना मधुर मेरा जीवन!

नव नव सुमनों से चुन चुन कर

धूलि, सुरभि, मधुरस, हिम-कण,

मेरे उर की मृदु-कलिका में

भरदे, करदे विकसित मन।"<sup>15</sup>

हालावाद के प्रतिष्ठित कवि हरिवंशराय बच्चन ने अपने गीतों में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, समय की महत्ता और आत्म निर्भरता को प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया है। अपने गीत 'जो बीत गई, सो बात गई' में वे लिखते हैं-

"जो बीत गई सो बात गई

जीवन में एक सितारा था

माना वह बेहद प्यारा था

वह डूब गया तो डूब गया

अम्बर के आनन को देखो

कितने इसके तारे टूटे

कितने इसके प्यारे छूटे

जो छूट गए फिर कहाँ मिले

पर बोलो टूटे तारों पर

कब अम्बर शोक मनाता है

जो बीत गई सो बात गई।"<sup>16</sup>

गोपालदास नीरज, नरेन्द्र शर्मा और बालकृष्ण शर्मा नवीन के गीतों ने भी अपनी अभिनव छाप छोड़ी है। प्रगतिशील काव्यधारा में सशक्त गीतों के माध्यम से शोषण, गरीबी और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई गई। नागार्जुन, त्रिलोचन, शमशेर बहादुर सिंह जैसे प्रतिभाशाली एवं लोकप्रिय कवियों ने गीतों को यथार्थवादी दृष्टिकोण से सहज सम्पृक्त किया है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डाॅ. सपना श्रीवास्तव, आधुनिक गीत-नवगीत, सतीश प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, इंदौर, नवीन संस्करण- 2026, पृष्ठ-01
2. वही,
3. वही, पृष्ठ-05
4. वही,
5. <https://www.google.com/url?q=https://vichaarsankalan.wordpress.com>, मा निषाद.....
6. [https://www.google.com/url?q=https://hindi.webdunia.com/hindi- वियोगी होगा पहला कवि...](https://www.google.com/url?q=https://hindi.webdunia.com/hindi-वियोगी_होगा_पहला_कवि...)
7. जयदेव, गीत गोविंद, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2004, पृष्ठ : 23-24
8. <https://www.google.com/url?q=https://www.hindwi.org/pad/he-ri-main-to-prem-diwani>
9. <https://www.google.com/url?q=https://www.hindwi.org/pad/he-ri-main-to-prem-diwani>
10. <https://www.google.com/url?q=https://kavishala.com/sotradhar/kabir-das/chala-hansa-va-desa>
11. <https://www.google.com/url?q=https://www.hindwi.org/kavitt/raavare-ruup-kii-riiti-anuup-ghananand-kavitt>
12. <https://www.google.com/url?q=https://www.hindwi.org/kavita/badhe-chalo-dwarika-prasad-maheshwari-kavita>
13. [https://www.google.com/url?q=https://kavitakosh.org/हिमाद्रि तुंग श्रृंग से...](https://www.google.com/url?q=https://kavitakosh.org/हिमाद्रि_तुंग_श्रृंग_से...)
14. <https://www.google.com/url?q=https://www.hindwi.org/geet/main-heer-bhari-mahadevi-varma-geet>
15. [https://www.google.com/url?q=https://kavitakosh.org/ याचना, सुमित्रानंदन पंत](https://www.google.com/url?q=https://kavitakosh.org/याचना,सुमित्रानंदन_पंत)
16. <https://www.google.com/url?q=https://www.hindwi.org/geet/jo-beet-gai-harivanshrai-bachchan-geet>